'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 23 | अंक 1 | 19 मार्च, 2019 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

वें वर्ष में मंगल प्रवेश

19 मार्च 1997 को प्रारम्भ हुआ हमारा पथप्रेरक विगत अंक के साथ 22 वर्ष का हो गया एवं इस अंक के साथ 23वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। सोशल मीडिया के दौर में सूचनाओं के त्वरित प्रसारण के बीच भी हमारा यह पाक्षिक समाचार पत्र हम सबके स्नेह एवं सहयोग के बल पर निरन्तर लोकप्रिय होता जा रहा है। माह की 4 व 19 तारीख को इसके सोशल मीडिया संस्करण का समाज बंधुओं द्वारा इंतजार इसके प्रति समाज के स्नेह को प्रदर्शित करता है। समाज का यही स्नेह एवं अपनापन संपादकीय टीम को अपने गुरुत्तर दायित्व का बोध करवाता है तथा और अच्छा करने की प्रेरणा देता है। आप सब की तरफ से मिलने वाले स्नेह एवं प्रेरणा तथा श्री क्षत्रिय युवक संघ के आशीर्वाद से हमारा पथप्रेरक अपने 23वें वर्ष में भी और अधिक उपयोगिता के साथ समाज में अपनी उपस्थिति को दमदार बनाएगा ऐसा विश्वास है। इसके विभिन्न स्थायी संपादकीय, खरी-खरी, प्रणेता से प्रेरणा, गुरु शिखर से जीवनोपयोगी जानकारी इस वर्ष भी जारी रहेंगे एवं साथ ही 23वें वर्ष के प्रथम अंक से एक नया कॉलम 'इतिहास का झरोखा' भी प्रारम्भ किया जा रहा है। लेकिन समाचार पत्र का मुख्य विषय उसके समाचार होते हैं इसलिए आप सभी इसके पाठक होने के साथ-साथ संवाददाता का दायित्व भी बदस्तूर जारी रखें एवं अपने आसपास के सामाजिक समाचारों को निरन्तर भेजते रहें। सदैव आपके सहयोग एवं स्नेह का आकांक्षी।

● संपादक, पथप्रेरक

पूर्व सांसद मोहर सिंह राठौड़ की मूर्ति का अनावरण

चुरू के पूर्व सांसद एवं संघ के स्वयंसेवक मोहरसिंह राठौड़ (लाखाऊ) की मूर्ति का अनावरण श्री बणीर राजपूत छात्रावास चुरू में 28 फरवरी को समारोहपूर्वक किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि मोहरसिंह जी स्पष्ट वक्ता एवं सादगी के धनी थे। उनकी तर्कशक्ति का न्यायाधीश भी लोहा मानते थे। उनकी अद्भुद प्रतिभा उनके अंतर में बैठी इंसानियत के अधीन थी इसलिए वे हम सबके प्रेरणादायक बने। हमें भी अपनी इंसानियत को जागृत रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि आजकल लोग पद एवं प्रतिष्ठा प्राप्त कर उसका उपयोग अपने अहंकार को तुष्ट करने के लिए करते हैं। यह ईर्ष्यायु स्वभाव है इससे बचा जाना चाहिए. समारोह के मुख्य अतिथि उच्च शिक्षा मंत्री भंवरसिंह भाटी ने कहा कि मोहरसिंह जी ने विभिन्न समाजों को साथ लेकर राजनीति में एक मिशाल कायम की, हमें उनका अनुकरण करना चाहिए। समारोह की अध्यक्षता कर रहे राजेन्द्रसिंह राठौड़ उपनेता प्रतिपक्ष ने कहा कि वे सदन में जिले के विकास के लिए विपक्ष के सदस्य की तरह अपनी ही सरकार के खिलाफ बोल लेते थे। हम सबको अपने क्षेत्र के विकास के लिए उनकी इस विशेषता का अनुकरण करना चाहिए। विधायक अभिनेष महर्षि ने उनको समाज एवं चुरू के विकास के लिए समर्पित राजनेता बताया। पूर्व विधायक मनोज न्यांगली ने कहा कि मोहरसिंह जी की परम्परा को आगे बढ़ाने के लिए हम सबको मिलकर काम करना पड़ेगा। पीसीसी महासचिव भंवर अजीतसिंह ने कहा कि मोहरसिंह जी ने चुरू में बालिका महाविद्यालय के लिए सरकार से मांग की। मांग पूरी न होने पर व्यक्तिगत स्तर पर चुरू के प्रवासी लोगों के संपर्क कर बालिका महाविद्यालय बनवाया। जिला प्रमुख हरलाल सहारण, महिला कांग्रेस की प्रदेशाध्यक्ष रेहाना रियाज, भंवरसिंह सामौर, जयसिंह लाखाऊ आदि ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर उनकी स्मृति में लिखी पुस्तक 'वेलि मोहरसिंघ री' का अनावरण किया गया। मोहरसिंह जी 1962 में निर्दलीय व 1972 में कांग्रेस पार्टी के सदस्य के रूप में विधायक चुने गए। 1964 में वे चुरू लोकसभा से सांसद निर्वाचित हुए। उन्होंने चुरू में समाज सेवा के अनेक कार्यों को प्रारम्भ करवाया।

आरक्षण की विसंगतियों को लेकर ज्ञापन

केन्द्र एवं प्रदेश की सरकारों द्वारा हाल ही में आर्थिक रूप से कमजोर अनारक्षित वर्ग हेतु घोषित आरक्षण में आवासीय भूखंड, मकान एवं कृषि योग्य जमीन की ऐसी शर्तें लगाई गई हैं जिनके फल स्वरूप अनारक्षित वर्ग के लिए यह आरक्षण एक मजाक सा बन गया है। एक तरफ तो 8 लाख से कम आय की शर्त लगाई गई है वहीं किसी शहर में मात्र 100 वर्ग गज का प्लॉट या 1000 वर्ग फुट का मकान होना भी आरक्षण के लिए अपात्र बना देता है। उसी प्रकार 5 एकड़ से कम कृषि भूमि की शर्त लगाई गई है जो राजस्थान जैसे अनुपजाऊ क्षेत्र के लिए अव्यवहारिक है। इस प्रकार की अव्यवहारिक शर्तों से अपने आपको ठगा महसूस करने वाले युवाओं ने श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन के तत्वावधान में प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में मुख्यमंत्री जी के नाम स्थानीय प्रशासन को ज्ञापन सौंपा। इस ज्ञापन में माननीय मुख्यमंत्री जी से मांग की गई कि राजस्थान की परिस्थितियों को देखते हुए गुजरात सरकार की तर्ज पर यहां भी केवल 8 लाख रुपए से कम आय की ही शर्त रखी जावे चाहें वह किसी भी स्त्रोत से हासिल हुई हो। साथ ही प्रशासन द्वारा आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के प्रमाण-पत्र बनाने में की जा रही आनाकानी को लेकर भी ज्ञापन सौंपा गया एवं माननीय मुख्यमंत्री जी से निवेदन किया गया कि प्रमाण-पत्र जारी करने का शासनादेश जारी करवाए। एक अन्य विसंगति यह है कि सरकार द्वारा चालू भर्तियों में एक ही नोटिफिकेशन से जारी हुए आरक्षण आदेशों में गुर्जर, रेबारी आदि जातियों को तो आरक्षण मिल रहा है जबकि इन्हीं भर्तियों में उसी नोटिफिकेशन के साथ जारी आर्थिक आधार पर आरक्षण नहीं दिया जा रहा जो एक अन्यायपूर्ण कार्रवाई प्रतीत होती है। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

सीकर

बरातियों को यथार्थ गीता भेंट की

संघ के स्वयंसेवक प्रदीपसिंह बीदासर की बहिन डिंपल कंवर के विवाह में उनके पिता महेन्द्रसिंह द्वारा बारातियों को 10 मार्च को विदाई के समय भेंट स्वरूप यथार्थ गीता भेंट की गई। महेन्द्रसिंह की इस अनूठी पहल को सभी ने सराहा एवं अनुकरणीय बताया। विवाह में आए अतिथियों को भी यथार्थ गीता भेंट स्वरूप दी गई।

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

हमारे यहां यह कहावत प्रचलित है कि पूत के पांव पालने में ही दिख जाते हैं अर्थात महापुरुषों का बचपन ही उनके भविष्य के जीवन का संकेत होता है। उनका भविष्य उनके बचपन के क्रियाकलापों से ही प्रकट होने लगता है या यूं कहें कि वे प्रारम्भ से ऐसे ही होते हैं। उनके महापुरुषत्व के गुण उन्हें बचपन से ही विशिष्ट बना देते हैं। पर पीड़ा के प्रति कोमलता एवं उस पीड़ा के निवारण हेतु प्रयत्नशील होना महापुरुषों का एक गुण है। पूज्य तनसिंह जी बचपन से ही इस गुण से ओतप्रोत थे। उनके जीवन के प्रारम्भ की अनेक घटनाएं उनके इस गुण को पुष्ट करती हैं एवं बाद का तो उनका पूरा जीवन ही समाज की पीड़ा की प्रकट कहानी है। वे जब चौपासनी स्कूल के बाद आगे की पढ़ाई के लिए पिलानी पधारे तो वहां बिरला जी द्वारा बनाए गए एक छात्रावास में रहते थे। छात्रावास में उनके साथ अनेक राजपूत विद्यार्थी ऐसे रहते थे जिनके परिवारों की आर्थिक स्थिति उनके जैसी ही थी। पूज्य तनसिंह जी अपनी व्यवस्था करने के साथ-साथ अपने साथियों के लिए भी प्रयासरत रहते थे। उन्होंने इस दौरान अपना एवं साथियों का गुजारा चलाने के लिए अनेक काम किए। लेकिन धन कमा कर भी धन की कमी अनुभव करते थे क्योंकि उन्होंने अपने अलावा अपने जैसे अनेक साथियों की जिम्मेदारी स्वतः स्फूर्त ओढ़ ली थी। पूज्य तनसिंह जी को बिरला जी की तरफ से तीन रुपए मासिक छात्रवृत्ति मिला करती थी। लेकिन उनके एक साथी कमलाकांत सिंह को यह छात्रवृत्ति नहीं मिला करती थी जबकि पूज्य श्री का मानना था कि उनकी अपेक्षा कमलाकांत सिंह जी को छात्रवृत्ति की अधिक आवश्यकता है। उन्होंने स्वयं को मिलने वाली छात्रवृत्ति उनको देनी प्रारम्भ कर दी। उनको यह नहीं बताया कि वे उनको मिलने वाली छात्रवृत्ति दे रहे हैं बल्कि यह बताया कि हमारा एक धनी मित्र अपना नाम उजागर न करने की शर्त पर उन्हें गुप्त सहायता कर रहा है। कमलाकांतसिंह को अंत तक पता नहीं चला कि वह गुप्त दानी मित्र कौन था, बस अध्ययन चलता रहा। पूज्य श्री अपनी आवश्यकताओं के लिए अध्ययन के साथ-साथ और मेहनत कर अपने एवं साथियों के लिए धनार्जन करते रहे।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... - अभयसिंह रोडला

(2) कम्पनी सचिव (Company Secretary) : कम्पनी सचिव किसी कम्पनी द्वारा कानूनी नियम व प्रक्रियाओं की अनुपालना हेतु उत्तरदायी होते हैं। वे कम्पनी के लिए इन-हाऊस लीगल एक्सपर्ट का दायित्व निभाते हैं। कम्पनी सचिव प्रोफेशन के विकास व नियमन का कार्य इंस्टीट्यूट ऑफ कम्पनी सेक्रेटरीज ऑफ इण्डिया (ICSI) के अधीन है। यह संसदीय अधिनियम द्वारा स्थापित राष्ट्रीय स्तर की संस्था है। कम्पनी सचिव कोर्स के तीन स्तर हैं :

(i) फाउण्डेशन प्रोग्राम : 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् इसमें प्रवेश लिया जा सकता है। इसकी अवधि आठ महीने की होती है तथा चार पेपर पास करने होते हैं।

(ii) एग्जीक्युटिव प्रोग्राम (Executive Program) : फाउण्डेशन प्रोग्राम पूरा करने के पश्चात् इसमें प्रवेश लिया जा सकता है। इसके अलावा फाईन आर्ट्स (ललित कला) के अतिरिक्त किसी भी अन्य वर्ग से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् भी इस प्रोग्राम में प्रवेश लिया जा सकता है। इसके अन्तर्गत दो मॉड्युल में सात (7) पेपर पास करने होते हैं। प्रथम मॉडयुल में चार तथा द्वितीय मॉडल में तीन पेपर होते हैं।

(iii) प्रोफेशनल प्रोग्राम (Professional Program) : एग्जीक्युटिव प्रोग्राम के दोनों मॉड्युल उत्तीर्ण करने के पश्चात ही इस प्रोग्राम में प्रवेश मिलता है। इसके अन्तर्गत चार मॉड्युल होते हैं तथा प्रत्येक मॉड्युल में दो पेपर होते हैं अर्थात् कुल आठ पेपर पास करने होते हैं।

उपरोक्त तीनों प्रोग्राम के अतिरिक्त कम्पनी सचिव के कोर्स में पन्द्रह महीने की ट्रेनिंग भी शामिल होती है। यह ट्रेनिंग एग्जीक्युटिव प्रोग्राम पास करने के पश्चात् प्रारम्भ की जा सकती है। यह ट्रेनिंग ICSI द्वारा प्रायोजित कंपनी में अथवा किसी प्रशिक्षित कम्पनी सचिव की देखरेख में पूरी करनी होती है। फाउण्डेशन, एग्जीक्युटिव तथा प्रोफेशनल प्रोग्राम तथा पन्द्रह माह की ट्रेनिंग पूरी करने के पश्चात् अभ्यर्थी को ICSI के असोसिएट सदस्य की मान्यता मिलती है तथा वह अपने नाम के साथ ACS (Associate Company Secretary) पदनाम का प्रयोग कर सकता है।

कम्पनी सचिव कोर्स के बारे में और अधिक विस्तृत जानकारी www.icsi.edu पर प्राप्त की जा सकती है।

क्रमशः

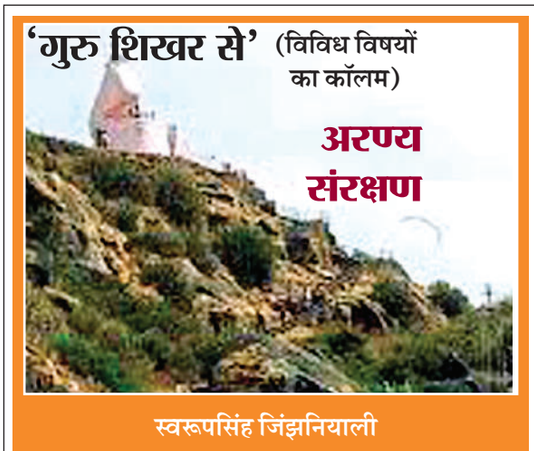

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

जैसलमेर रियासत मरुस्थलीय क्षेत्र से घिरी भाटी राजपूतों की सियासत रही है। मरू भूमि में पानी एवं वनस्पति का अधिक महत्व रहा है। जहां वर्षा कम होती है वहां पानी, चारे, अनाज का अभाव सामान्यतः रहता आया है। यहां का जनमानस पर्यावरण को अपने ही तरीके से संरक्षित रखते आया है। यहां गांवों के चारों ओर गौचर (गायों व पशुओं की चरने की जगह) अथवा औरण (अरण्य या वनक्षेत्र) होते रहे हैं। ये औरण लोक देवी या देवताओं, भोमियों अथवा जुंझारों (भूमि, गाय व जनता की रक्षा करते हुए शहीद हुए व्यक्ति) के नाम वन भूमि के रूप में छोड़े जाते थे। इन्हीं वन क्षेत्रों में पानी के लिए तालाब अथवा कुएं भी होते थे। जिनका पानी मनुष्य एवं पशुओं के काम आता था। तालाबों के पानी के आवक क्षेत्र (आगौर) की साफ सफाई का हर कोई व्यक्ति ध्यान रखता था। औरण अथवा वनक्षेत्र में कोई भी व्यक्ति लकड़ी अथवा पेड़ नहीं काटता था। यह एक अघोषित अलिखित संविधान था जो प्रायः सभी को मान्य था। इसका उल्लंघन करने पर गांव के बड़े बुजुर्ग ऐसा करने वाले को दण्ड भी देते थे। कुल मिलाकर अभावों से लड़ने के लिए जन-जन में पर्यावरण के प्रति अच्छी सोच होती थी।

कोई एक सौ पचास वर्ष पूर्व की एक पर्यावरण से जुड़ी लोककथा है। जैसलमेर रियासत के राजाओं के दीवान महेश्वरी अथवा जैन लोग रहे हैं। इसमें कुछ दिवानों का तो राजा से भी ज्यादा वर्चस्व रहा है। उन्होंने कई मनमानियां भी की जो जनता के लिए परेशानियां बनी। घटना के समय जैसलमेर के दीवान थे सेठ नथमल मोहता। रियासत में उनका बड़ा प्रभाव था। उन्होंने शहर में एक विशाल हवेली बनाई थी जो आज भी नथमल मोहता की हवेली के रूप में पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। इन्हीं मोहता की कहानी लोककथा के रूप में सुनी सुनाई जाती है।

पोकरण एवं जैसलमेर के मध्य भादरिया राय का वर्तमान में बड़ा मंदिर है। यहां सन्त हरिवंश सिंह निर्मल द्वारा बनाया गया विशाल पुस्तकालय प्रसिद्ध है। मंदिर के कारण गांव भादरिया कहलाता है जो जसौड़ भाटी राजपूतों का गांव है। भादरिया राय को मां स्वांगिया जी का रूप माना जाता है। भादरिया जी सात चारण बहनों में पुजित एक देवी रूप है जिसे यहां के राजा एवं भाटी राजपूत अपनी कुलदेवी भी मानते हैं। मां भादरिया जी नाथ सम्प्रदाय से प्रभावित थे इसलिए उन्हें आईनाथ के नाम से भी पूजा जाता है। भादरिया जी में बेर के पेड़ों के साथ केर, खेजड़ी, जाल आदि के वृक्षों की आज भी बहुतायत है।

सेठ दीवान नथमल मोहता को काफी समय बाद पुत्र प्राप्ति हुई। पुत्र प्राप्ति की खुशी में पद से मदचूर सेठ ने भादरिया राय की औरण में अच्छी बोरड़ी की लकड़ियां काट कर लाने का फरमान दिया ताकि वह अपने पुत्र के झूलने के लिए पालना बनवा सकें। सेठ के लोग औरण से पेड़ काट कर लाए जहां राजा स्वयं भी लकड़ी नहीं काट सकता था। जब औरण में बोरड़ी का पेड़ काटने की घटना का वहां के लोगों को पता चला तो यह बात राजा तक पहुंचाई गई। राजा ने दीवान को उसके इस कृत्य पर फटकार लगाई। उन्होंने नथमल को मंदिर में सोने का पेड़ प्रायश्चित स्वरूप चढ़ाने का आदेश दिया। नथमल ने राजा के आदेश पर भादरिया राय के देवालय जाकर सपरिवार मां से माफी मांगी, भोजन प्रसादी कर सोने का पेड़ क्षमार्थ चढाया।

घाल्यो नथमल बोरड़की रे घाव
(कुल्हाड़ी से काटना)
बोरड़की करलाई (रोई)
नैने बाल (छोटे बालक) ज्यौं।

इस घटना का वर्णन लोक गीतों व वार्ताओं में बताया जाता है। ऐसी कथाएं प्राचीन समय में पर्यावरण संरक्षण के महत्व को प्रतिपादित करती है कि पद से बड़े लोग भी इस तरह दण्डित किए जाते थे। पुरानी व्यवस्था का आज भी अनुकरण होता तो शायद पर्यावरण संरक्षण के अभाव में समस्या ही नहीं पनपती। ना ही नक्सलीय समस्या ही खड़ी होती। भोगवाद के दौर में संसाधनों के अधिकतम दोहन की प्रवृत्ति पुराने शासकों की संतुलित व्यवस्था का अनुकरण नहीं करने के कारण ही पनपी है। काश आजादी के बाद आए भाग्य विधाता अपने पूर्व के शासकों से कुछ सीख लेते।

श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन की

बाड़मेर, जालोर व सिरोही की जिला बैठकें संपन्न

बाड़मेर

भीनमाल

श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन की जिला स्तरीय बैठकों के क्रम में 1 मार्च को बाड़मेर, 2 मार्च को जालोर एवं 3 मार्च को सिरोही जिले की बैठकें रखी गई। बाड़मेर जिले की बैठक भारतीय ग्राम्य आलोकायन द्वारा संचालित आलोक आश्रम में रखी गई। शाम 6 बजे से प्रारम्भ हुई बैठक के प्रारम्भ में श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन की स्थापना की भूमिका बताई गई। भूमिका में बताया गया कि युवाओं में विभिन्न कारणों से पनपने वाली नकारात्मकता को दूर कर उनके सामाजिक भाव को सकारात्मक बनाकर समाज के लिए उपयोगी बनाने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ के अनुषांगिक संगठन के रूप में फाउंडेशन का गठन किया गया है। फाउंडेशन के केन्द्रीय संयोजक यशवर्धन सिंह झेरली ने फाउंडेशन के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए बताया कि इसका प्रथम उद्देश्य सकारात्मक सामाजिक भाव के युवाओं को श्री क्षत्रिय युवक संघ से परिचित करवाना है। इसके अलावा संवैधानिक व्यवस्था के प्रति सकारात्मकता विकसित करना, वर्तमान व्यवस्था के साधनों एवं सरकारी योजनाओं का लाभ लेने के लिए प्रेरित करना, विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व कर रहे युवाओं को समाज हित में संयोजित करना एवं अन्य समाजों के प्रति सम्मान भाव जागृत करने के लिए यह संगठन काम करेगा। सह संयोजक आजाद सिंह ने फाउंडेशन की संघ से संबद्धता एवं संगठनात्मक स्वरूप की जानकारी दी। भोजनोपरांत द्वितीय सत्र में संभागियों ने अपने-अपने विचार रखे। लूणसिंह महाबार, तेजमालसिंह मूंगेरिया, प्रेमसिंह लुणु, टीलसिंह चूली, गिरधरसिंह जैसिंधर, दीपसिंह रणधा, प्रवीणसिंह बाड़मेर आगोर, नरपतसिंह गेहूं, राजेन्द्रसिंह भिंयाड़, कानसिंह खारा, लक्ष्मण सिंह लुणु आदि ने अपने विचार रखते हुए कहा कि फाउंडेशन से सकारात्मक सोच वाले युवाओं को प्लेटफार्म मिला है। जो सोचते थे उसे अब कर पाएंगे। संवादहीनता पनपी है इसीलिए संघ हमारे पास संवाद करने आया है अन्यथा हमें संवाद करने संघ के पास जाना चाहिए। समाज में यह सोच विकसित करने में सहायता मिलेगी कि तंत्र की विफलता को भीड़ के माध्यम से नहीं बदला जा सकता। सभी ने सोशल मीडिया की सक्रियता को लेकर बात कही। माना कि सोशल मीडिया में फैली नकारात्मकता को दूर करने के लिए सकारात्मक लोगों को अधिक सक्रिय होना पड़ेगा क्योंकि सोशल मीडिया का तोड़ सोशल मीडिया ही है। अंत में तहसीलवार बैठकें कर फाउंडेशन की बात धरातल पर पहुंचाने को लेकर विचार विमर्श किया गया। रात्रि विश्राम के उपरान्त प्रातः 7.30 से 8.30 बजे तक श्री क्षत्रिय युवक संघ की शाखा लगाई गई जिसमें समाज चरित्र पुस्तक पर चर्चा हुई।

2 मार्च की शाम जालोर जिले के भीनमाल शहर स्थित उकसिंह देवल मेमोरियल कॉलेज परिसर में जालोर की जिला स्तरीय बैठक रखी गई। इस बैठक के प्रारम्भ में भी बाड़मेर की भांति भूमिका, उद्देश्यों एवं कार्यप्रणाली की जानकारी दी गई। भोजनोपरांत द्वितीय सत्र में उपखण्ड अधिकारी राजेन्द्रसिंह जालेली ने कहा कि हमें यह समझना आवश्यक है कि सरकार से लड़कर नहीं जीत सकते। उन्होंने कहा कि जालोर में बहुत कुछ सकारात्मक हो रहा है, उसे जारी रखा जाना चाहिए। इनके अलावा जेठूसिंह पचानवा, प्रेमसिंह अचलपुर, महेन्द्रसिंह कारोला, चक्रवर्ती सिंह देसू, कुंदनसिंह रटूजा, भोपालसिंह झलोड़ा, वीर बहादुरसिंह असाड़ा, कृष्णपाल सिंह राखी, भैरूंपालसिंह दासपां, छैलसिंह उचमत, फूलसिंह जाखड़ी, जितेन्द्रसिंह सांडपुरा आदि ने अपनी बात कही। तहसील अनुसार बैठकें कर फाउंडेशन के संदेश को गांव-गांव पहुंचाने की योजना बनाई गई। 3 मार्च को प्रातः 7.30 से 8.30 बजे शाखा लगाई गई जिसमें समाज चरित्र पुस्तक के प्रथम अध्याय पर चर्चा की गई।

3 मार्च को ही प्रातः 11 बजे अन्य समाजों के साथ एक सद्भावना बैठक रखी गई जिसमें मेघवाल, जैन, ब्राह्मण, राजपुरोहित, रैगर, रेबारी, जीनगर, मुसलमान, माली आदि विभिन्न जातियों के प्रतिनिधि शामिल हुए। बैठक की प्रस्तावना बताते हुए कहा गया कि पूज्य तनसिंह जी ने आजादी से पहले भारत की त्याग मूलक संस्कृति की रक्षार्थ श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की जो विगत 72 वर्षों से इस हेतु प्रयत्नशील है। आज अधिकारों के संघर्ष एवं संवादहीनता के कारण समाजों के बीच की समझ में दरार आई है। दूरियां बढ़ी हैं जिससे सदियों के साथ रहने वाले समाजों में संघर्ष की परिस्थितियां बन रही है। बैठक में मांगीलाल मेघवाल, श्याम विश्नोई, सत्यभानसिंह पुरोहित, दिनेश माली, आजादसिंह, भैरूंपालसिंह, भोपालसिंह आदि ने अपने विचार रखे। सभी ने कहा कि हमें संवादहीनता को समाप्त करने के लिए ऐसे प्रयासों को नियमित करना चाहिए। आज परिस्थिति ऐसी बन गई है कि महापुरुषों को भी आपस में बांट लिया है। आज देश के लिए काम करने वाले लोगों को भी राष्ट्रीय गौरव की अपेक्षा जातीय गौरव बनाया जा रहा है। इन सब विकृतियों के लिए नियमित एवं निरन्तर संवाद किया जाना चाहिए। सोशल मीडिया से पहले समाज में बुजुर्गों की बातों को सुना जाता था, युवा उनका ही अनुकरण करते थे लेकिन अब युवाओं को मुखर होने का माध्यम मिला है और युवा अनुभव के अभाव में नकारात्मकताओं की ओर अधिक अग्रसर होते हैं। बैठक के उपरान्त सभी ने साथ में भोजन किया एवं भीनमाल में इस प्रयास को निरन्तर रखने का विश्वास दिलाया।

3 मार्च को शाम सिरोही जिले की बैठक शिवगंज स्थित स्वरूप वाटिका में रखी गई जिसमें सिरोही जिले की विभिन्न तहसीलों के प्रतिनिधि पहुंचे। प्रथम सत्र में पूर्व की बैठकों की भांति भूमिका, कार्य योजना एवं उद्देश्यों को विस्तार से बताया गया। भोजनोपरांत द्वितीय सत्र में उदयसिंह डिंगार, मांगूसिंह बावली, भैरूपालसिंह बालावत, दीपेन्द्रसिंह पीथापुरा, महिपालसिंह लुणाल, भवानीसिंह भटाणा, श्रवणसिंह रुखाड़ा आदि ने अपनी बात रखी।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सर्व समाज बैठक भीनमाल

शिवगंज

संपादकीय

फायदे का कलंक और सात्विक त्याग

त्याग हमारी भारतीय संस्कृति का मूलाधार है। इससे भी आगे सोचें तो त्याग इस सृष्टि का आधार है। त्याग के बिना सृष्टि का सृजन संभव नहीं है। बीज द्वारा अपने पेट को चीरे बिना अंकुरण संभव नहीं है और अंकुरण ही तो प्रारंभ है निर्माण का। यदि हम हमारे आसपास नजर दौड़ाएं तो हर सृष्टि के पीछे, हर निर्माण के पीछे मौजूद त्याग के दर्शन कर पाएंगे। परमेश्वर की सृष्टि का यथारूप विश्लेषण करेंगे तो पाएंगे कि सर्वत्र सात्विक त्याग की उपस्थिति इस सृष्टि को चलायमान रखे हुए है। पशु-पक्षी, स्थावर, जंगम एवं वनस्पति को देखेंगे तो पाएंगे कि उनकी समस्त क्रियाएं परमेश्वर प्रदत्त व्यवस्था के अधीन स्वतः चलायमान है और उनमें सात्विक त्याग समाया हुआ है। पेड़ किसी प्रतिफल की चाह में फल, फूल और छाया नहीं देता। नदी किसी प्रतिफल की चाह में प्रवाहमान नहीं होती। पशु-पक्षी अपने ऐसे बच्चों का लालन-पालन करते हैं जो बड़े होने पर कहां जाएंगे इसका भी उन्हें भान नहीं होता। इस प्रकार यदि इस सृष्टि की व्यवस्था का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण यथारूप करें तो सर्वत्र सात्विक त्याग के दर्शन होंगे। यही सात्विक त्याग सृष्टि का आधार है लेकिन मनुष्य ने अपनी बुद्धि का प्रयोग कर इस सात्विक त्याग को फायदे के कलंक से कलंकित किया है। मनुष्य हर कार्य को करने से पहले पूछता है कि इससे फायदा क्या? उसका यह प्रश्न ही उसके हर त्याग को कलंकित कर सात्विक होने से रोकता है। मनुष्य ने जब कभी इस सृष्टि के लिए महान कार्य किए हैं तो उससे पहले उसने उस कार्य से क्या फायदा होगा इस बात को सदैव नकारा है और उसका यह न करना ही उसे उस महान कार्य में प्रवृत्त करता है। कार्य को करने से पहले फायदे का लेखा-जोखा करने वाले या तो कार्य प्रारंभ ही नहीं कर पाते और करते हैं तो भी उसे कर्तव्य कर्म मानने की अपेक्षा व्यापार ही मानते है क्यों कि लाभ और हानि का विवेचन वणिक वृत्ति है। इसीलिए फायदे की चाह को सात्विक त्याग के लिए कलंक कहा जाता है। पूज्य तनसिंह जी ने अपनी पुस्तक 'समाज चरित्र' के 'त्याग' नामक अध्याय में लिखा है कि 'जो लोग फायदा चाहते हैं वे त्याग नहीं व्यापार कर रहे हैं ... जो फायदे के पीछे पागल हुए फिरते हैं वे भागवत सत्य में विश्वास न कर अपनी ही बुद्धि के अभागे गुलाम होते हैं। त्याग के लिए यह सोचना नितांत असंगत है, कि उसके त्याग से किसी को लाभ होगा अथवा नहीं।' यदि हम हमारे महान पूर्वजों के जीवन पर विचार करें तो पाएंगे कि वे सात्विक त्याग की प्रतिमूर्ति थे। उनके उस सात्विक त्याग का ही परिणाम है कि पीढ़ियां गुजर जाने के बाद भी हम सब उनका सम्मान करते हैं। संसार उनका ही सम्मान नहीं करता बल्कि इतनी पीढ़ियां गुजर जाने के बाद भी उनकी संतान होने के कारण आज भी हमें यत्किंचित सम्मान मिल ही जाता है। इस सम्मान का कारण उनके उस सात्विक त्याग का फायदे के कलंक से कलंकित नहीं होना है। यदि आज भी हमें उन महान पूर्वजों को स्मरण अच्छा लगता है, उनका सम्मान करना अच्छा लगता है, उनकी जय जयकार करना अच्छा लगता है तो उनका अनुकरण करने की ओर भी उन्मुख होना चाहिए। उनकी महानता का कारण उनका वह सात्विक त्याग ही था जिसे वे बिना किसी प्रतिफल की चाह के प्रतिपादित किया करते थे। कर्तव्य कर्म मानकर प्रतिपादित किया करते थे। ईश्वर के मंगलमय विधान का हिस्सा मानकर किया करते थे। यदि हमें उनके अनुकरण की ओर बढ़ना है, उनके चरित्र को आत्मसात करने योग्य बनना है तो उसके लिए सात्विक त्याग को अपनाना पड़ेगा। हमारे कर्मों को कर्तव्य कर्म मानकर उन्हें फायदे के कलंक से कलंकित होने से बचाना होगा। इस सात्विक त्याग को ही प्रतिपादित करने का कार्य पूज्य तनसिंह जी द्वारा प्रदत्त श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है। उन्होंने इसका मार्ग बताते हुए उसी समाज चरित्र पुस्तक में लिखा है कि 'त्याग की मनोवृत्ति पैदा करने के लिए शिक्षार्थी को घर से बाहर निकलकर एक पेड़ के नीचे बैठकर एक घंटा बिताना है। जब तक शिक्षार्थी के मन में यह शंका उठती रहेगी कि इस पेड़ के नीचे बैठने से कोई लाभ नहीं, इससे तो अच्छा श्रमदान द्वारा किसी सड़क को ही बनाया जाए, त्याग सीखने का यह गलत तरीका है।' पूज्य श्री आगे लिखते हैं कि 'पेड़ के नीचे बैठकर एक घंटा भर नहीं बिताया जा सकता, समाज के नाम पर जो अपने जीवन का चौबीसवां हिस्सा भी बिना बहस के समर्पित नहीं कर सकता, उसका समाज के लिए जीवन न्यौछावर करने की डींगे हांकना मिथ्या पाखंड है।' उनके द्वारा प्रतिपादित मार्ग श्री क्षत्रिय युवक संघ इसी त्याग को प्रतिपादित करने का कार्य कर रहा है। पूज्य श्री इसी अध्याय में आगे लिखते हैं कि 'यदि समाज को सम्मानित और गौरव पूर्ण जीवन देना है तो वर्तमान का भी निर्माण करना पड़ेगा। भूतकाल सिर्फ प्रेरणा के लिए है, वह मूल धन नहीं है जिनके ब्याज पर हम हमारा सम्मान खरीद सकें।' ऐसे में सात्विक त्याग की जागृति ही एक मात्र उपाय है। सात्विक त्याग किसी पाखंड या टोटकों से पैदा नहीं किया जा सकता। उसके लिए ऊपर लिखे अनुसार बिना बहस अपने आपको समर्पित करना ही एक मात्र उपाय है। उस समर्पण के बल पर ही फायदे के कलंक से बचा जा सकता है और अब तक जो कलंक लग चुका है उसे धोया जा सकता है। इसलिए आएं उस सात्विक त्याग की ओर प्रवृत्त होने के लिए बिना बहस समर्पण का अभ्यास करने हेतु श्री क्षत्रिय युवक संघ की किसी शाखा या शिविर में अपने आपको प्रस्तुत करें।

खरी-खरी

भ्रमपूर्ण भय से भयभीत भद्रपुरुष

अनेक भय ऐसे होते हैं जिनका कोई अस्तित्व नहीं होता। ऐसे भय कृत्रिम रूप से बनाए हुए भय होते हैं जो वातावरण के प्रभाव में व्यक्ति को भयभीत करते हैं। चालाक एवं षड्यंत्रकारी लोग इन भयों के जन्मदाता होते हैं इसलिए वे तो भयभीत नहीं होते लेकिन सज्जन लोग षड्यंत्रकारी लोगों द्वारा बनाए गए वातावरण से इतने आक्रांत होते हैं कि वे इन कृत्रिम भयों से ही भयभीत रहते हैं और इसे ही भ्रमपूर्ण भय कहा जाता है। ऐसे ही भ्रमपूर्ण भयों में से एक है जाति। जाति शब्द के खिलाफ षड्यंत्र पूर्वक इतना जहर घोला गया कि जाति अपने आप में गाली बन गई। जिन्होंने वह षड्यंत्र किया वे आज भी जाति को उसी मजबूती से पकड़कर उसका लाभ लिए जा रहे हैं और उनकी बातों से प्रभावित सज्जन लोग उनके षड्यंत्र का शिकार हो जातीय भाव के सदुपयोग से भी बचते हैं? ऐसे में हमारे सामने प्रश्न उठता है कि क्या जाति को मिटाया जा सकता है? क्या किसी जाति विहीन समाज की संकल्पना व्यवहारिक भी है? क्या कभी यह समाज, जब से किसी व्यवस्थित सामाजिक व्यवस्था से संचालित हुआ है, कभी जाति विहीन रहा है? पूज्य तनसिंह जी ने अपनी समाज चरित्र पुस्तक में उल्लेख किया है कि 'जाति एक समूह है जिसमें कुछ गुणों अथवा कर्मों की समानता होती है.... जाति अपने में एक और दूसरों से भिन्न की यथार्थता प्रकट करती है..... जातीय भाव बिना किसी महत्व कार्य की सिद्धि नहीं हो सकती। यह अनेक से एकता का स्वरूप है.... जातियां संसार में तब तक अनिवार्य रूप से बनी रहेंगी जब तक कि गुणों अथवा कर्मों की समानता किसी न किसी रूप से बनी रहेगी.... जातीय भाव एक शक्ति है, जाति उसका मूर्त रूप है।' इस विश्लेषण को देखें और वर्तमान में समाज के स्वरूप को देखें तो यह बात पुष्ट होती है। परम्परागत जातियों के विनाश की बात करने वालों ने संविधान के माध्यम से नई जातियां गढ दीं। अब अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, सामान्य वर्ग आदि जातियां बना दी। अपनी झेंप मिटाने के लिए इन्हें जाति की अपेक्षा वर्ग कह दिया लेकिन गुण धर्म तो वे ही जाति वाले हैं. इससे भी आगे जाएं तो कोई कांग्रेसी बन गया है तो कोई भाजपायी। कोई साम्यवादी बना तो कोई पूंजीवादी। विश्लेषण का अर्थ इतना ही है कि जैसा पूज्य तनसिंह जी ने लिखा है कि गुण और कर्मों की जब तक समानता रहेगी तब तक जातियां भी रहेंगी। जब तक सज्जन लोग षड्यंत्रकारियों के चंगुल में फंसकर अपने आपको जाति के साथ होने का ठप्पा लगने के भ्रमपूर्ण भय से आक्रांत रहेंगे तब तक जातीय भाव, जो पूज्य श्री के अनुसार एक शक्ति है, का सदुपयोग नहीं कर पाएंगे और ऐसे में षड्यंत्रकारी दुर्जन लोग इस जातीय भाव का दुरुपयोग कर अपनी दुकान चलाते रहेंगे। इसलिए आवश्यकता है इस भ्रम पूर्ण भय से बाहर निकलने की। जातीय भाव का सदुपयोग कर उसे राष्ट्र एवं समाज के लिए उपयोगी बनाने के काम में संलग्न लोग यदि षड्यंत्रकारी लोगों के चंगुल में फंसकर हीन भावना से ग्रसित रहेंगे, इस भ्रमपूर्ण भय से पीड़ित रहेंगे तो वे अपनी भूमिका का खुलकर निर्वहन नहीं कर पाएंगे। जो लोग यह मानते हैं कि जातीय भाव एक शक्ति है तो उन्हें उस शक्ति को सन्मार्ग पर लाने के लिए आवश्यक रूप से इस हीन भावना से बाहर निकलना पड़ेगा कि वे कुछ गलत कर रहे हैं या लोग उनके बारे में क्या सोचेंगे। अंत में यदि हम मानते हैं कि जातीय भाव का सदुपयोग करना एक श्रेष्ठ काम है तो श्रेष्ठ काम को करने में हीनता कैसी? लुकाव छिपाव कैसा? जो काम छिपकर किए जाते हैं उनमें अपराध बोध होता है और अपराध बोध के साथ किया गया काम कभी सफल नहीं होता। इसलिए आएं यह घोषणा करें कि हम अपनी जाति के लिए काम कर रहे हैं, उसे वंदनीया मानकर उसकी वंदना कर रहे हैं, उसकी संतानों को श्रेष्ठता के संरक्षण के लिए अग्रसर कर रहे हैं। विश्वास माने श्रेष्ठ लोगों की यह घोषणा मात्र ही नेष्ठ लोगों की शक्ति की क्षीण कर देगी क्यों कि अच्छाई और बुराई दोनों साथ नहीं रह सकती।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	उ.प्र.शि.	18.05.2019 से 28.05.2019 तक	**गनोड़ा। (बांसवाड़ा)** लिटिल एंजल्स सीनियर सैकण्डरी स्कूल। गनोड़ा में बेणेश्वर रोड़ स्थित कल्याणनगर में शिविर स्थल स्थित है। ● जयपुर, बीकानेर, जोधपुर, बाड़मेर आदि स्थानों से गनोड़ा के लिए बसें हैं। ● जयपुर से बांसवाड़ा के लिए एक बस वाया गनोड़ा भी है। ● गुजरात से आने वाले सामलाजी होते हुए डूंगरपुर पहुंचे, वहां से गनोड़ा के लिए बसें हैं। ● ट्रेन से उदयपुर आएं वहां से गनोड़ा के लिए बस है। ● गणवेश व आवश्यक सामग्री लेकर आएं।
2.	उ.प्र.शि. (बालिका)	31.05.2019 से 06.06.2019 तक	**पुष्कर (अजमेर)।** जयमल कोट पुष्कर। कम से कम 8वीं पास और पूर्व में शिविर की हुई बालिकाएं ही आ सकती हैं। गणवेश लेकर आएं।
3.	मिलन शिविर	07.06.2019 से 10.06.2019 तक	भारतीय ग्राम्य आलोकायन ट्रस्ट द्वारा संचालित आलोक आश्रम, गेहूं रोड़, बाड़मेर। ● आमंत्रित स्वयंसेवक ही आ सकेंगे। ● आमंत्रित स्वयंसेवक पूरा शिविर न कर सकें तो कम-से-कम दो दिन के लिए आ सकते हैं।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

दीपसिंह बेण्यांकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

छठी शताब्दी ईसा पूर्व का समय भारतीय इतिहास में परिवर्तनकारी समय माना जाता है। इस काल में जहां बौद्ध और जैन सहित अनेक दार्शनिक विचारधाराओं का उद्भव हुआ, वहीं राजनीतिक क्षेत्र में जनपद महाजनपदों में परिवर्तित हो रहे थे। इन महाजनपदों में से कुछ में राज व्यवस्था गणतंत्रात्मक थी, तो कुछ में राज तंत्रात्मक। इन महाजनपदों में से कुछ धीरे-धीरे अपनी ताकत बढ़ाते हुए अपना विस्तार कर रहे थे, इनमें से ही एक ऐसा महाजनपद था, मगध। मगध पर इस समय बृहद्रथ वंश का शासन था। इस वंश का अंतिम शासक था जिसकी हत्या उसके मंत्री पुलक द्वारा कर दी गई। रिपूंजय की हत्या के बाद उसके एक सेनानायक भट्टिय जिसे पुराणों में क्षेत्रोजस कहा गया है, ने मगध को राजनीतिक संकट से उभारा। उसने अपने पुत्र बिम्बिसार को मगध के राज सिंहासन पर अभिषिक्त किया और मगध में एक नए राजवंश हर्यंक वंश की नींव डाली, हर्यंक नागवंश की एक उपशाखा थी। बिम्बिसार एक महत्वकांक्षी शासक था। सिंहासन पर बैठते ही बिम्बिसार ने राज्य विस्तार की नीति अपनाई। बिम्बिसार ने तात्कालीन राजनीति के अनुसार ही प्रमुख राजवंशों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित कर अपनी स्थिति को सुदृढ़ बनाया। इनमें से दो विवाह संबंध अत्यन्त महत्वपूर्ण थे, जिसमें बिम्बिसार ने वैशाली के लिच्छवि शासक चेटक की पुत्री चेल्लना से विवाह किया जिसके फलस्वरूप बिम्बिसार को तात्कालिक भारत की एक शक्तिशाली, युद्धप्रिय जाति लिच्छवियों का सहयोग प्राप्त हुआ वहीं दूसरा वैवाहिक संबंध कौशल प्रदेश के शासक प्रसेनजीत की बहिन महाकौशला देवी के साथ, जिससे कौशल प्रदेश की मैत्री मगध को प्राप्त हुई साथ ही विवाह के भेंट स्वरूप मगध को काशी जैसा उपजाऊ प्रदेश प्राप्त हुआ। वैवाहिक संबंधों द्वारा अपनी स्थिति मजबूत करने के बाद बिम्बिसार ने अपना विजय अभियान प्रारम्भ किया। प्रारम्भ में अपने नजदीक के छोटे-छोटे राज्यों की जीत कर मगध में मिलाने के बाद बिम्बसार ने अंग राज्य पर आक्रमण किया। अंग एक शक्तिशाली राज्य था, अंग पर उस समय ब्रह्मदत्त शासन कर रहा था। एक लम्बे कठिन संघर्ष के बाद मगध को सफलता प्राप्त हुई, ब्रह्मदत्त युद्ध में मारा गया और अंग को मगध साम्राज्य में मिला लिया गया। बिम्बसार की इन विजयों ने मगध साम्राज्य के उस विजय और विस्तार के लम्बे दौर को प्रारम्भ किया जो कई राजवंशों से होते हुए मौर्यवंश के अशोक की कलिंग विजय तक जारी रहा। बिम्बसार एक कुशल प्रशासक व निर्माता भी था, उसने एक सुदृढ़ शासन व्यवस्था की नींव डाली जिस पर चलकर उसके उत्तराधिकारियों ने एक विशाल साम्राज्य खड़ा किया। बिम्बसार गौतम बुद्ध के समकालीन थे। वह बुद्ध के प्रिय अनुयायी थे। विम्बिसार के अंमित समय के बारे में इतिहासकारों का मानना है कि लम्बे शासन के बाद उसने अपने पुत्र अजातशत्रु को राज्य सौंप कर संन्यास ग्रहण कर लिया था, भारतीय इतिहास में बिम्बसार को एक महान साम्राज्य निर्माता व कुशल प्रशासक के तौर पर याद किया जाएगा। **(क्रमशः)**

करजोड़ा (पालनपुर) में चिंतन बैठक

गुजरात के पालनपुर क्षेत्र के करजोड़ा गांव में 9 मार्च की सायं 9 से रात्रि 11 बजे तक राजपूत नवयुवक मंडल करजोड़ा की ओर से श्री क्षत्रिय युवक संघ की चिंतन बैठक का आयोजन किया गया। गांव के ब्रह्माणी माता मंदिर में आयोजित इस कार्यक्रम में गांव के युवा, बुजुर्ग एवं महिलाएं शामिल हुई।

वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह कुणधेर ने पूज्य तनसिंह जी को मानवता के पुजारी बताते हुए उनके उसूलों पर चलने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि वर्तमान में त्याग मूलक क्षात्र संस्कृति की नितांत आवश्यकता है और उसका वैश्विक स्तरीय विश्व विद्यालय श्री क्षत्रिय युवक संघ है। गांव के युवाओं ने संघ की साप्ताहिक शाखा लगाने का निर्णय लिया एवं आगामी सत्र में एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर लगाने का प्रस्ताव दिया।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

हृदय - (एक)

श्री परमहंस आश्रम शक्तेगढ़ की सायंकालीन सभा में भक्तों की जिज्ञासा पर कि, शरीर का वह कौन-सा अंग है जिसे हृदय कहते हैं, जिस हृदय में भगवान् का निवास होता है ? - दिनांक 5 जून, सन् 2009 को पूज्य महाराजश्री का प्रवचन :

भगवान् वास्तव में हृदय में ही होते हैं, लोग पता नहीं कहां-कहां ढूंढ़ते हैं। लेकिन जब कभी किसी ने पाया तो हृदय-देश में। सीताजी तैंतीस करोड़ देवी-देवताओं से अनुनय-विनय, प्रार्थना कर रही थीं कि स्वयंवर में हम राम का वरण करें किन्तु कोई लाभ नहीं। अन्त में सब ओर से निराश होकर हृदयस्थ ईश्वर की जिस पल शरण गईं, उसी क्षण उन्हें सफलता मिल गई। सीताजी का स्वयंवर चल रहा था। जब उन्होंने यज्ञभूमि में पदार्पण किया, महान् पराक्रमी राजा-महाराजा धनुष की प्रत्यञ्चा चढ़ाने का प्रयास कर रहे थे। रावण और बाणासुर भी अपनी शक्ति का प्रयोग कर किनारे हो गए। राजाओं ने परामर्श किया, दस-दस हजार राजा एक साथ धनुष उठाने लगे। पहले धनुष तो रास्ते से हटे। परस्पर युद्ध कर विजयी नरेश सीता को प्राप्त कर लें। फिर भी धनुष टस से मस नहीं हुआ।

तब रामहि बिलोकि बैदेही।
सभय हृदयं विनवति जेहि तेही।।
(मानस, 1/256/4)

सीताजी ने राम की ओर दृष्टिपात् किया- फूल की पंखुरी के समान कोमल। जिस धनुष को उठाने के प्रयास में विशाल भुजदण्ड वाले नरेश गिर पड़ते रहे हों, उसे यह कोमल शरीर वाले कैसे उठा पाएंगे? राम को देखकर वह कातर हृदय से **'बिनवति जेहि तेही'** - हे चौरा माई, हे डीह बाबा, हे पिशाचमोचन, हे संकटमोचन- झटके में जो भी याद आ गया, उन सबको मना डाला। फिर भी सफलता के लक्षण नहीं दिखे।

मनहीं मन मनाव अकुलानी।
होहु प्रसन्न महेस भवानी।।
करहु सफल आपनि सेवकाई।
करि हितु हरहु चाप गरुआई।।
(मानस, 1/256/6)

हे शंकर-पार्वती जी। आज तक मैंने आपकी सेवा की है। उसके बदले में जब मेरा हित सधता दिखाई पड़े। रामजी की अंगुलियां धनुष का स्पर्श करती दिखाई पड़ें, उस समय धनुष को हलका कर दें। पहले ही हलका कर देंगे तब तो कोई सामान्य भी धनुष को तोड़ देगा, जब मेरा हित सधता दिखाई पड़े तभी चाप को हलका करें। सफलता नहीं मिली, तब गणेश जी की ओर उन्मुख हुईं -

गननायक बरदायक देवा, आजु लगे कीन्हिउं तुअ सेवा।।
बार बार बिनती सुनि मोरी। करहु चाप गुरुता अति थोरी।।
(मानस, 1/256/7-8)

सीताजी बोलीं- हे गणेश जी। आप तो वर देने में प्रवीण हैं। मेरी विनती है कि चाप की गुरुता को स्वल्प कर दें। फिर भी सफलता नहीं दिखाई पड़ी, तब -

देखि देखि रघुबीर तन, सुर मनाव धरि धीर।
भरे बिलोचन प्रेम जल, पुलकावली सरीर।।
(मानस, 1/257)

तैंतीस करोड़ देवी-देवताओं का सामूहिक विनय किया। कोई लाभ नहीं हुआ, तब माता-सीता उन प्रभु की शरण गईं जिनकी शरण सबको जाना चाहिए-

तन मन बचन मोर पनु साचा।
रघुपति पद सरोज चितु राचा।।
तौ भगवानु सकल उर बासी।
करिहि मोहि रघुवर कै दासी।।
(मानस, 1/250/5)

यदि तन, मन और वचन से मेरा प्रण सत्य है, राम के चरणों में मेरा मन अनुरक्त है तो भगवान् (कौन-से भगवान्? **'सकल उर बासी!'**) जो सबके हृदय में निवास करते हैं, मुझे रघुवीर की दासी बना दें। **'कृपा निधान राम सबु जाना'**- भगवान् ने जान लिया कि अब मुझे पुकार रही है, मेरी शरण आ गई है -

जिस क्षण सीता हृदयस्थ ईश्वर की शरण गईं, धनुष टूट गया। जयमाला पड़ गई, सफलता मिल गई। अस्तु, भजन एक परमात्मा का ही करना चाहिए। सफलता जब भी मिलेगी, वहीं से मिलेगी। इतने देवी-देवताओं को मनाने का तात्पर्य क्या था? वस्तुतः गोस्वामी तुलसीदास जी के समय में भारतीयों का मस्तिष्क इसी में उलझा हुआ था। उन्होंने इस कथानक के माध्यम से देवी-देवताओं की वास्तविकता बता दी थी। सफलता मिली तो भगवान्- **'सकल उर बासी'** से। श्रीमद्भागवद्गीता का भी यही सन्देश है- **'ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।'** (18/61)- ईश्वर सभी प्राणियों के हृदय में वास करता है।

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्।।
(18/62)

अर्जुन। उस हृदयस्थ ईश्वर की शरण जाओ, सम्पूर्ण भावों से जाओ। कुछ भाव पिशाचमोचन, कुछ संकटमोचन, कुछ चौरा देवी, कुछ दुर्गा देवी- तब तो हम भटक गए, इसीलिए सम्पूर्ण भाव से एक परमात्मा की शरण में जायं। उसकी कृपा प्रसाद से आप परम शान्ति को प्राप्त कर लेंगे। 'स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्'- उस घर को पा जाएंगे जो शाश्वत है, अजर-अमर है। आप रहेंगे और आपका निवास सदा रहने वाली शांति, सदा रहने वाली समृद्धि आपका वरण करेगी। इस प्रकार आपके शास्त्रों में भगवान् की पूजा का विधान केवल हृदय में है।

रामचरितमानस के मंगलाचरण में है -

भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम्।।2।।

गोस्वामी जी कहते हैं- मैं भवानी और शंकर की वन्दना करता हूं। शंकर आदि सद्गुरु हैं। उन सद्गुरु की- जो शंकाओं से अतीत हैं, कल्याण तत्त्व में स्थित है, मैं वन्दना करता हूं। जिनके बिना सिद्धजन भी हृदय में स्थित ईश्वर को नहीं पहचान पाते। जनसामान्य की कौन कहे, सिद्धस्तर को प्राप्त लोग भी उनकी कृपा के बिना हृदयस्थ ईश्वर को पहचान नहीं पाते। तुलसीदास जी की रामचरितमानस के अनुसार ईश्वर हृदय में रहता है। गीता के अनुसार ईश्वर हृदय में रहता है। वेदोक्त-उपनिषदोक्त ईश्वर हृदय में है -

अंगुष्ठामात्रः पुरुषोऽन्तरात्मा सदा
जनानां हृदये सन्निविष्टः।
(कठोपनिषद्, 2/3/17)

अतः प्रार्थनास्थली हृदय और भजन एक परमात्मा का शास्त्रीय निर्देश है। यह जितने मन्दिर हैं, परमात्मा की पाठशाला हैं, नामघर हैं, पूजाघर हैं, प्रार्थना-स्थलियां हैं। भगवान् की मूर्ति तो एक में भी नहीं है; क्योंकि-

बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना।
कर बिनु करम करइ बिधि नाना।।
(मानस, 1/117/5)

भगवान् अमूर्त हैं, अरूप हैं तो उनकी मूर्ति आई कहां से? आपके पूर्वजों में से जिस किसी ने भगवत्ता को प्राप्त कर लिया, उन महापुरुषों की प्रतिमा इन मन्दिरों में संजोई गई है। यह सामूहिक प्रार्थना-स्थलियां भगवान् के समीप पहुंचाने का माध्यम हैं। रामलीला, रासलीला, कथावार्ता, नाम-जप, तीर्थ-व्रत, पर्व-उत्सव सभी धर्म के आरम्भिक सोपान हैं, किन्तु प्रशस्त पथ पर आते ही भगवान् का भजन, भगवान् का ध्यान हृदय में ही किया जाता है।

विदेश से एक प्रश्न आया है कि यदि हृदय में भगवान् रहते हैं तो शरीर के किस भाग का नाम हृदय है? भगवान् मस्तिष्क में रहते हैं या सीने में या जो धक-धक करता है, उसमें रहते हैं? हृदय क्या है?

जीव विज्ञान की मान्यताओं से भी उच्चतर शोध हमारे आर्षग्रन्थों में है। जिनके अनुसार हृदय कोई ऐसा यन्त्र है जिसमें मात्र भगवान् ही नहीं अपितु सृष्टि का सम्पूर्ण कार्य उससे सञ्चालित होता है -

ब्यापकु एकु ब्रह्म अबिनासी।
सत चेतन घन आनन्द रासी।।
(मानस, 1/22/6)

वह ब्रह्म कण-कण में व्याप्त है, एक है। वृहद् है इसलिए ब्रह्म, अविनाशी है- जिसका कभी विनाश नहीं होता। वही सत्य है, चेतन है, असीम आनन्द की राशि है। भला वह प्रभु रहता कहां है? **'अस प्रभु हृदयं अछत अबिकारी।'** (मानस, 1/22/7)- ऐसा परमात्मा सबके हृदय में निवास करता है अर्थात् ईश्वर का निवास हृदय है। **(क्रमशः)**

(पृष्ठ तीन का शेष) बाड़मेर, जालोर व सिरोही की जिला बैठकें संपन्न

अन्य समाजों के प्रति सम्मान भाव विषय पर बात करते हुए कहा गया कि प्रायः यह धारणा बनी हुई है कि जालोर-सिरोही में हमारा समाज अन्य समाजों के साथ सम्मानजनक व्यवहार नहीं करता। यह धारणा कितनी उचित है यह अलग विषय है लेकिन यह तो स्पष्ट है कि यह धारणा हमारे खिलाफ है और इसे तोड़ना हमारा दायित्व है क्योंकि इससे हमारी ही छवि खराब होती है। एक विशेष बात सिरोही एवं जालोर दोनों ही बैठकों में उभरी कि सोशल मीडिया में अन्य समाजों के प्रति दुर्भावना पूर्ण टिप्पणी यहां से बाहर कमाने गए लोग ज्यादा करते है क्योंकि वे घटना की वास्तविक परिस्थितियों से अवगत नहीं होते और सोशल मीडिया में प्रचारित झूठे समाचारों को आधार बनाकर अपनी बात लिख देते हैं जिसका समाज की छवि पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे माहौल खराब होता है। हमें इसे रोकने का प्रयास करना चाहिए। इसी चर्चा में सिरोही जिले की विभिन्न तहसीलों की बैठकों को लेकर विस्तार से चर्चा की गई एवं तहसील बैठकों के लिए एक निश्चित कार्यक्रम केन्द्र से ही बनाने की बात कही गई। शिवगंज की बैठक से पहले फाउंडेशन की टीम की दलित चिंतक भंवर मेघवंशी के साथ बैठक हुई। वे सिरोही जिले के प्रवास पर थे एवं सूचना मिलने पर मिलने आए। बैठक में विगत माह 'संघशक्ति' में हुई बैठक में आलोक में चर्चा की गई। संवाद को निरन्तर बनाए रखने की बात कही गई। इस अवसर पर सह संयोजक आजादसिंह ने भंवर मेघवंशी को अपनी पुस्तक 'कारगिल' भेंट की। बैठकों के उपरान्त आगामी 21 दिसम्बर तक के लिए जिला स्तर पर 10-10 समाज बंधुओं की निम्नानुसार कोर टीम गठित की गई।

बाड़मेर : विजयसिंह माडपुरा, नरपतसिंह दूधवा, महेन्द्रसिंह तारातरा, गणपतसिंह हुरों का तला, लूणसिंह महाबार, तेजमालसिंह मूंगेरिया, प्रेमसिंह लुणु, कानसिंह खारा, डूंगरसिंह गोरड़िया, स्वरूपसिंह मूंगेरिया।

जालोर : गणपतसिंह भंवराणी, गंगासिंह सांपणी, कोजराजसिंह चारणीम, दलपतसिंह तुरा, भैरूंपालसिंह दासपां, कृष्णपालसिंह राखी, गणपतसिंह रतनपुर, दीपसिंह दूधवा, गजेन्द्रसिंह जावीया, देवेन्द्रसिंह विरोल।

सिरोही : भवानीसिंह भटाणा, महिपालसिंह कलापुरा, कल्याणसिंह रुखाड़ा, राजेन्द्रसिंह जाखोड़ा, गणपतसिंह हमीरपुरा, राजेन्द्रसिंह सनवाड़ा (आर), अर्जुनसिंह बारेवड़ा, वीरेन्द्रसिंह बालदा, शक्तिसिंह मांडाणी, दीपेन्द्रसिंह पीथापुरा।

सिद्धराव मायथी जी की जयंती मनाई

जैसलमेर के वीर सिद्ध राव मायथी जी की जयंती रामगढ़ स्थित राजपूत छात्रावास में मनाई गई। यज्ञ, प्रार्थना, पुष्पांजलि के पश्चात् वक्ताओं ने वीर मायथी जी के जीवन चरित्र का वर्णन करते हुए उनके त्याग व बलिदान से सीख लेने की बात कही। संघ के जैसलमेर संभाग के संभाग प्रमुख गोपालसिंह रणधा ने उपस्थित लोगों से अपने बालक बालिकाओं को संघ के शिविरों में भेजने का आह्वान किया एवं प्रतिवर्ष जयंती मनाने की बात कही। इनके अलावा अमरसिंह रणाऊ, खेमेन्द्रसिंह, पदमसिंह जोगा, चतुरसिंह व्याख्याता आदि ने कार्यक्रम को संबोधित किया। आगामी जयंती नेतसी (बकरथला) में मनाए जाने को लेकर चर्चा की गई।

उदयपुर में मासिक स्नेहमिलन

उदयपुर शहर में संघ के मासिक स्नेहमिलनों की श्रृंखला में 28 फरवरी को नाकोड़ा नगर स्थित उदयसिंह भटवाड़ा के मकान पर स्नेह मिलन रखा गया। प्रार्थना, सहगायन के पश्चात् संघ कार्य बाबत चर्चा की गई। स्नेहमिलन में उदयपुर शहर के सहयोगी व स्वयंसेवकों के परिवार शामिल हुए।

जाखली गांव का प्रेरणादायी संकल्प

नागौर जिले के जाखली गांव में स्थानीय राजपूत समाज की बैठक 28 फरवरी को रखी गई जिसमें तीनों कोटड़ियों के समाज बंधु शामिल हुए। बैठक में मृत्युभोज, तीसरा, शोक बंधाई, छःमाही, सुखसेज, नवमी का स्नान, रिश्तेदारों से लेने वाली ओढ़ावणी आदि प्रथाओं को समूल रूप से बंद करने का सर्व सम्मत निर्णय लिया गया। अस्थी विसर्जन के समय गंगाजी के पंडों की अपेक्षा शांतिकुंज हरिद्वार में होने वाली निःशुल्क विसर्जन व्यवस्था को अपनाने का निर्णय भी लिया गया। इस बैठक में गम के अवसर पर किए जाने वाले आडंबरों को बंद किया गया एवं आगामी बैठक में खुशी के अवसर पर बरती जाने वाली रुढ़ियों को बंद करने हेतु चर्चा करना तय किया गया।

राजकोट में प्रा.प्र.शि. संपन्न

गुजरात के सौराष्ट्र संभाग में राजकोट के हरभमजीराज राजपूत छात्रावास में 2 मार्च से 4 मार्च तक संघ का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। इस शिविर में छात्रावास में रहने वाले 82 विद्यार्थी शामिल हुए। क्षेत्र के 25 गांवों के ये विद्यार्थी कॉलेज स्तर पर अध्ययनरत हैं एवं अधिकतर इंजीनियर के छात्र हैं। शिविर का संचालन केन्द्रीय कार्यकारी महेन्द्रसिंह पांची ने किया। शिविरार्थियों की सक्रिय भागीदारी से शिविर का वातावरण अच्छा बना एवं शिविर अनुभव में शिविरार्थियों ने प्रतिवर्ष छात्रावास में शिविर लगाने का आग्रह किया। उल्लेखनीय है कि प्रारम्भ के दिनों में यह छात्रावास सौराष्ट्र में संघ की गतिविधियों का केन्द्र रहा है एवं पूज्य तनसिंह जी व श्रद्धेय आयुवानसिंह जी के सानिध्य में भी यहां शिविर हुए हैं। वरिष्ठ स्वयंसेवक प्रवीणसिंह सोलिया की चाह थी इस क्षेत्र में शिविर लगे एवं उन्हीं के प्रयासों से यह शिविर लगा। वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा का भी शिविर में सानिध्य मिला एवं शिविर के उपरान्त यहां शाखा प्रारंभ हो चुकी है।

जोवतां जोवतां

जोवतां जोवतां
व्है जावै है फासलो
बरसों रे नेह रो
पण अठै गरबीजे मायड़
क्यूंक अठै मौत सस्ती
अर पाग मूंगी है।

इण नेही थार देख्या
छप्पना काळ
गौरहरे सौनार किले
राखी रजवट री रीतां
पाळी प्रेम प्रीतां
जुगां जुगां सूं
एक कानी सूं
दूजै कानी तक।

अठै रा बळबळता धोरा
चरड़का देवै है
इण भौम सूं जन्मया है
फोग आकड़ा अर कैर
कूमटियों रे साथै
इण मुळकती सौरभ
सिणगार सूखां पौधां
अर सेवण सूं कीनौ है ।

बडेरा केवता कै
इण जनमिया कैक
बिछू, नाग अर बिसवर
जिका गळहार सरीखा
आज ही ओपै है।

कुण जाणै,
इण सूखां धोरा धरती म्है
हिवड़ा हरया हरया है
कुण सौचतो व्हैला,
जळहीन मरू भौम में
च्यारुंमेर पसरयो है
अपणापौ अर भौळापणौ।

इण थार में नीपज्या
पन्नड़, आल्है अर डूंगर
सरीखा शूरवीर
जिणां रूखाळन मात
रणखेतर भिड़तां
माथां पांतर्या
बाळपणै में टाबर करता
माथां रा सौदा
ऐड़ी अठै री नारियां
जिका व्हैगी सतवंती
कुळ मरजाद
मोटो गैणो मानै।

व्हैग्या वा बलिदान
सफा अळोप
जिण जिगा व्हैयो
फगत डाकिचाळो
पइसां रो बोलबालो
आज ही म्हारी निजरां
उडीक रयि है
ऊजळा पानां अतीत रा
बो बखत
पाछौ कद आसी।

● कमल सिंह सुल्ताना

दिव्या सिंह भाटी राजस्थान में प्रथम

जोधपुर जिले के अणवाणा गांव निवासी एवं मरुधरा ग्रामीण बैंक बागोड़ा (जालोर) के शाखा प्रबंधक भगवानसिंह भाटी की पुत्री दिव्या सिंह भाटी सेना की एडवोकेट जनरल की परीक्षा में राजस्थान में प्रथम एवं अखिल भारतीय स्तर पर छठे स्थान पर रही है।

अक्षिता कंवर को गार्गी पुरस्कार

मूल रूप से भटवाड़ा खुर्द निवासी एवं वर्तमान में चित्तौड़गढ़ में निवासरत भगवतसिंह की पुत्री अक्षिता कंवर को कक्षा दस में 76.17 प्रतिशत अंक हासिल करने के उपलक्ष में शिक्षा विभाग द्वारा गार्गी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

(पृष्ठ एक का शेष)

जैसलमेर

बीकानेर

आरक्षण... माननीय मुख्यमंत्री जी से इस अन्याय को भी दूर करने का निवेदन किया गया। बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, सिरोही, जालोर, झुंझुनूं, सीकर, नागौर आदि जिला मुख्यालयों के साथ-साथ भीनमाल, शिवगंज, सांचौर, शिव, सिवाणा, नोखा, कुचामन, बालोतरा, चौहटन, ओसियां, नोखा, सायला, आहोर, सुमेरपुर, रानीवाड़ा, पिण्डवाड़ा, रेवदर, मेड़ता सिटी, फतेहगढ़, जसवंतपुरा, तिंवरी, बापिणी, पलसाना, लक्ष्मणगढ़ आदि अनेक उपखण्ड मुख्यालयों पर तहसील स्तर पर तहसीलदार के माध्यम से मुख्यमंत्री महोदय को ज्ञापन भेजा गया। मुख्यमंत्री जी के जालोर प्रवास के दौरान उनसे मिलकर भी ज्ञापन दिया गया। सीकर में विधायक परसराम मोरदिया को भी ज्ञापन दिया गया।

राजेन्द्रसिंह भिंयाड (द्वितीय) को पितृशोक

संघ के शिव प्रांत के प्रांत प्रमुख राजेन्द्रसिंह भिंयाड (द्वितीय) के पिता **स्वरूपसिंह** भिंयाड का महाशिवरात्रि के दिन 4 मार्च को देहावसान हो गया। परमेश्वर उनकी आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें एवं परिवार को इस विछोह को सहने की क्षमता प्रदान करें।

स्वरूपसिंह

संघ प्रमुख श्री का सीकर प्रवास

अपने नियमित प्रवास कार्यक्रम के तहत माननीय संघ प्रमुख श्री 12 मार्च को सीकर पधारे। उन्होंने सीकर स्थित दुर्गा महिला विकास संस्थान के पद्मिनी छात्रावास एवं मीरा गर्ल्स स्कूल का अवलोकन किया एवं आवश्यक निर्देश दिए। सीकर में संघ के स्वयंसेवकों एवं श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन के कार्यकर्ताओं के साथ भी बैठक कर गतिविधियों की जानकारी ली।

धर्मेन्द्रसिंह जाड़ेजा बने राज्यमंत्री

गुजरात की जामनगर उत्तर विधानसभा सीट से विधायक धर्मेन्द्रसिंह जाड़ेजा को गुजरात सरकार में राज्यमंत्री बनाया गया है। उन्होंने 9 मार्च को शपथ ग्रहण की।

धरोहर संरक्षण एवं प्रोन्नति प्राधिकरण के

पूर्व अध्यक्ष पहुंचे संघशक्ति

राजस्थान धरोहर संरक्षण एवं प्रोन्नति प्राधिकरण के पूर्व अध्यक्ष एवं भारतीय जनता पार्टी के नेता ओंकारसिंह लखावत 2 मार्च को माननीय संघ प्रमुख से मिलने संघशक्ति पहुंचे। उन्होंने विगत सरकार द्वारा उनके प्राधिकरण द्वारा महापुरुषों की स्मृति में बनाए गए पैनोरमा की जानकारी दी एवं अन्य राजनीतिक सामाजिक चर्चा की।

नामचीन केन्द्रीय विश्वविद्यालय की सूचना

कक्षा बारहवीं विद्यार्थी जीवन का महत्त्वपूर्ण मोड़ होता है। इस दौरान कई विद्यार्थी स्नात्तक की डिग्री हासिल करने में तीन साल का भुगतान करते हैं। आमतौर पर एक सामान्य कॉलेज में दाखिला मिलने के पश्चात तीन साल कब गुजर जाते हैं विद्यार्थी को खबर ही नहीं रहती। ऐसे में यदि स्नात्तक ही करनी हो तो क्यों ना अच्छे विश्वविद्यालयों के परिसर से की जाए, जहां शिक्षा की गुणवत्ता व व्यवस्था, शिक्षा का एक उच्च स्तरीय माहौल, आवासीय सुविधाएं तथा अनेकों स्कॉलरशीप हासिल करने के अवसर मिलते हैं। जिन विद्यार्थियों को बारहवीं के बाद देश के नामी केन्द्रीय विश्वविद्यालयों दिल्ली युनिवर्सिटी (दिल्ली), जवाहर लाल नेहरू युनिवर्सिटी, (दिल्ली), बनारस हिंदू युनिवर्सिटी (बनारस), जामिया मिलिया युनिवर्सिटी (दिल्ली) से स्नातक करना हो उनके लिए निम्न जानकारी उपयोगी है।

प्रवेश प्रक्रिया :

हरेक विश्वविद्यालय की अपनी व्यवस्था है प्रवेश की। कई विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा के तहत प्रवेश देते हैं तो कई बारहवीं के अंकों के आधार पर।

दिल्ली युनिवर्सिटी : दिल्ली युनिवर्सिटी में दाखिला स्नात्तक में मैरिट आधारित व प्रवेश परीक्षा दोनों माध्यमों से होता है। तीनों वर्गों में (विज्ञान, कला, वाणिज्य) में प्रवेश होता है। मई माह के प्रथम व द्वितीय सप्ताह में ऑनलाईन प्रवेश फार्म भरे जाएंगे।

जामिया मिलिया युनिवर्सिटी (दिल्ली) : जामिया मिलिया परिसर की महत्ता इस आधार पर पुष्ट की जा सकती है कि पिछली संघ लोक सेवा आयोग की भर्ती प्रक्रिया में आईएएस की मुख्य परीक्षा में 54 छात्र अकेले जामिया मिलिया परिसर के छात्र थे। कक्षाओं का एक उच्च स्तरीय माहौल और शिक्षा का उच्च स्तरीय केंद्रीय विश्वविद्यालय है जामिया मिलिया।

प्रवेश फॉर्म- जारी, अंतिम दिनांक : 31 मार्च 2019

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बनारस) : बीएचयू परिसर गौरवमयी परिसर है। स्नात्तक के लिए इसमें प्रवेश परीक्षा के तहत चयन होता है। तीनों वर्गों के लिए प्रवेश होता है। सामान्यतः फरवरी माह में बीएचयू की फॉर्म प्रक्रिया पूरी हो चुकी होती है और मई माह में प्रवेश परीक्षा का आयोजन होता है। परीक्षा में सामान्यतः भारत का अध्ययन व भाषा आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं जो कि बारहवीं के स्तर के होते हैं।

इसमें प्रवेश फॉर्म भरने की अंतिम तिथि 9 मार्च थी।

जवाहरलाल नेहरू युनिवर्सिटी (दिल्ली) : देश की प्रख्यात युनिवर्सिटी जिसमें हरेक छात्र को आवासीय सुविधा मुहैया करवाई जाती है। जेएनयू में प्रवेश प्रक्रिया परीक्षा के माध्यम से संपन्न होती है। यह बात अलग है कि इसमें स्नात्तक केवल विदेशी भाषाओं के अध्ययन से संबंधित है। जो विदेशी भाषाओं के माध्यम से स्नात्तक करना चाहता हो उसके लिए देश भर में जेएनयू से अच्छा कोई परिसर नहीं। अधिस्नातक के लिए भी जेएनयू में दाखिला लिया जा सकता है वह भी प्रवेश परीक्षा के माध्यम से। उसमें सामान्य विषय (हिंदी, इतिहास, राजनीति, भूगोल) जैसे मानवीकी विषय भी शामिल हैं।

इसके आवेदन की अंतिम तिथि 1 मार्च थी।

● तेजमालसिंह मूंगेरिया

वीरेन्द्रसिंह प्रदेश मंत्री मनोनीत

संघ के स्वयंसेवक डॉ. वीरेन्द्रसिंह बैरसियाला को सीमाजन कल्याण समिति का प्रदेश मंत्री मनोनीत किया गया है। इनके पिता हरिसिंह संघ के म्यांजलार प्रांत के प्रांत प्रमुख हैं। डॉ. वीरेन्द्रसिंह इससे पहले अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में विभिन्न पदों पर कार्य कर चुके हैं एवं जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर में छात्रसंघ का चुनाव भी लड़ चुके हैं।

रणजीत सिंह बने चौथी बार अध्यक्ष

पाली जिले के धुंधला गांव निवासी रणजीतसिंह चौथी बार लंदन की ब्रुनेल युनिवर्सिटी में छात्र संघ अध्यक्ष के पद पर चुने गए हैं। 150 देशों के 18 हजार विद्यार्थियों के बीच चौथी बार जीतना रणजीतसिंह की गौरवमयी उपलब्धि है।

राजपूत शिक्षा कोष न्यास की बैठक

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक एवं पूर्व राज्यसभा सांसद नारायणसिंह माणकलाव द्वारा स्थापित राजपूत शिक्षा कोष न्यास की साधारण सभा की बैठक 4 मार्च को कोष के कार्यालय मारवाड़ राजपूत सभा भवन में संपन्न हुई। बैठक में विगत वर्ष कोष के माध्यम से अध्ययनरत 27 अभावग्रस्त प्रतिभाओं की शैक्षणिक प्रगति को लेकर चर्चा की गई। कोष के लिए अर्थ संग्रह हेतु प्रत्येक न्यासी की सक्रिय सहभागिता हेतु आग्रह किया गया। ट्रस्ट के कुछ सदस्यों द्वारा अर्थ संग्रह हेतु घर-घर जाकर सम्पर्क करने की मुहीम की जानकारी दी गई एवं सभी से इसका अनुकरण करने का आग्रह किया गया। इस अवसर पर सेवानिवृत्त आई.ए.एस. करणसिंह राठौड़ के पिता मोहनसिंह बोरुंदा द्वारा अपने पौत्र के विवाह के उपलक्ष में कोष द्वारा चलाए गए अभियान 'शिक्षा नेग' के तहत एक लाख रुपए का चैक प्रदान किया गया। साथ ही सेवानिवृत आई.एफ.एस. जसवंतसिंह नाथावत द्वारा भी एक लाख रुपए का चैक प्रदान किया गया।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org